मार्क्स का ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत -

मार्क्स का सबसे प्रारंभिक योगदान उसका ऐतिहासिक भौतिकवाद का सिद्धांत है। एंगेल्स ने अपनी रचना सोशलिज्म : युटोपियन एण्ड साइंटिफिक में ऐतिहासिक भौतिकवाद की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है :- यह एक ऐसा सिद्धांत है जिसके अनुसार मानव इतिहास की संपूर्ण दिशा को व्याख्या करनेवाला अंतिम कारण समाज का आर्थिक विकास है। मानव इतिहास की संपूर्ण दिशा की व्याख्या उत्पादन की तरीकों और विभिन्न होनेवाले परिवर्तनों के रूप में की गई है। आदिम साम्यवाद से आरंभ करके उत्पादन के तरीके तीन अवस्थाओं में से गुजरे है। ये है — दासता, सामंतवाद और पुंजीवाद। उसके बाद समाज का विभिन्न वर्गो (दास स्वामी, सामंत और सर्वहारा वर्ग एवं पुंजीपति) में विभाजन हो गया और साथ-ही इन वर्गो में एक दुसरे के विरुद्ध संघर्ष शुरु हो गया। मार्क्स के ऐतिहासिक भौतिकवाद के सिद्धांत की व्याख्या करने-

वाला सबसे गंभीर विवरण उसकी प्रीफेस टु ए कंट्रीब्यूशन टु द क्रिटिक ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी' अर्थात् राजनीतिक अर्थव्यवस्था की समीक्षा में योगदान की भूमिका में मिलता है। अपनी इस रचना में मार्क्स ने दावा किया है कि:
समाज के आर्थिक ढांचे का गठन 'उत्पादन के संबंधों (relations of Production) द्वारा होता है जो समाज का वास्तविक आधार है। इसके आधार पर समाज के कानूनी और राजनीतिक भारी ढांचे (super-structure) का निर्माण होता है इसके साथ ही समाज के उत्पादन के संबंध भी इसकी सामग्री के उत्पादन की शक्तियों के विकास की अनिश्चित अवस्था के अनुरूप होते हैं। इस प्रकार समाज के भौतिक जीवन के उत्पादन के तरीके (mode of Production) सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक जीवन की प्रक्रिया को निर्धारित करते हैं।